# कर्ण का मित्र-प्रेम

## अभ्यास

### मौखिक

क> कर्ण किसका ऋणी है?
Ans> कर्ण दुर्योधन का ऋणी है।

ख> कृष्ण को कौन कथा बता रहा है?
Ans> कृष्ण को कर्ण कथा बता रहा है।

ग> तन, मन, धन कर्ण ने किसे समर्पित किया है?
Ans> तन, मन, धन कर्ण ने दुर्योधन को समर्पित किया।

घ> कवि के अनुसार कौन-सा धर्म श्रेष्ठ है?
Ans> कवि के अनुसार मित्र-धर्म श्रेष्ठ है।

### लिखित

१> है ऋणी कर्ण का रोम-रोम
जानते सत्य यह सूर्य-सोम
तन, मन, धन दुर्योधन का है
यह जीवन दुर्योधन का है
सुरपुर से भी मुख मोडूँगा
केशव, मैं उसे न छोडूँगा।

3> 'धूलों में था पड़ा हुआ' का क्या तात्पर्य है?
Ans> इस पंक्ति का तात्पर्य है कि मैं मिट्टी में पड़ा हुआ था, मेरा कोई अस्तित्व नहीं था।

ख) रोम-रोम ऋणी होने का क्या अभिप्राय है?
उ) रोम-रोम ऋणी होने से तात्पर्य - शरीर का एक-एक रोम कर्जदार होना। आर्थिक दुर्योधन का कर्ण के ऊपर इतना अहसान है कि उसके शरीर का एक-एक रोम उसके उपकार का कर्जदार है।

ग) कर्ण ~~का~~ ने किसे तरु समान कहा है और क्यों?
उ) कर्ण ने दुर्योधन को तरु के समान कहा है क्योंकि दुर्योधन ने कर्ण पर अनगिनत उपकार उसी प्रकार ~~किये~~ किए हैं, जिस प्रकर वृक्ष सभी जीवों पर करता है।

घ) कर्ण अपने मित्र दुर्योधन की हर बात क्यों मानता है? क्या हर बात मानना ठीक है?
उ) कर्ण अपने मित्र दुर्योधन की हर बात मनता है क्योंकि वह अपने प्रति किए गए उपकार नहीं भूलता। अपनी माँ द्वारा त्यागे जाने पर दुर्योधन ने ~~ही~~ ही उसकी देखरेख की तथा पालन-पोषण किया इसलिए वह दुर्योधन की बातें को मानने से भी ~~इंकार~~ इनकार ~~करते~~ नहीं करता था।
किसी की सभी बातों को मानना या न मानना इस पर निर्भर करता है कि उसका भलाई व परोपकार करने वाले से कैसा संबंध है। हमें उन बातों को मानना

चाहिए जिससे किसी की भलाई हो परंतु ऐसी बातों को मानने से इंनकार कर देना चाहिए जिससे अनर्थ हो। एक बात अवश्य ध्यान रखनी चाहिए कि यदि कोई उपकार के बदले गलत कार्य करवाना चाहे तो ऐसा करने से मना कर देना चाहिए।

ख) मित्रता की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती। इस विचार प्रकट कीजिए।

उ> मित्रता की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती एक सच्चा मित्र हमेशा बिना किसी स्वर्थ के सहयोग करता है। वह सुख में ही नहीं बल्की दुःख के समय भी हमारे साथ रहता है तथा हमारी भावनाओं को समझने की कोशिश करता है। कुछ लोग धन को मित्रता से अधिक महत्त्व देते है जबकि ऐसा करना गलत है। इस प्रकार हम कह सकते है कि सच्चा मित्र की तुलना किसी से भी करना संभव नहीं है।

ग) दुर्योधन के लिए कर्ण अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। यह कहां तक उचित था? अपने विचार प्रस्तुत किजीए।

उ> दुर्योधन के लिए कर्ण ने अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया, सार्थकता दो प्रकार से समझी जा सकती है -

Date
Page

1) कर्ण ने अपने प्रति किए गए उपकार के कारण ऐसा किया।

2) दुर्योधन ने कर्ण को अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए प्रेरित किया। इन दोनों स्थितियों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कर्ण ने मित्र-धर्म पूरा किया परंतु दुर्योधन ने कर्ण का गलत उपयोग किया।